अध्याय 14

लाल समुद्र पार करना

अध्याय 14 और 15 मिस्र से इस्राएल के छुड़ाए जाने की कहानी का अंतिम प्रसंग है। अध्याय 14 में लोगों ने परमेश्वर के पराक्रम से मिली मुक्ति को अनुभव किया और अध्याय 15 में उन्होंने उस का उत्सव मनाया।

परमेश्वर ने इस्राएल को निर्देश दिए कि वे पीहाहीरोत तक यात्रा करें और लाल समुद्र के निकट डेरे खड़े करें (14:1, 2)। फिर उसने भविष्यवाणी की, कि क्या होगा: फ़िरौन का मन कठोर होगा, और वह इस्राएलियों का पीछा करेगा; परन्तु अन्ततः यहोवा ही की महिमा होगी (14:3, 4)।

परमेश्वर ने जैसी भविष्यवाणी की थी, जब फ़िरौन को पता चला कि इस्राएली भाग गए हैं, उन्हें जाने देने के विरुद्ध उसका मन पलट गया। छः सौ रथों को लेकर उसने जंगल में उनका पीछा किया, संभवतः उन्हें लौटने के लिए बाध्य करने के लिए। मिस्री परमेश्वर के लोगों तक पीहाहीरोत में पहुँच गए (14:5-9)।

जब इस्राएलियों ने मिस्री सेना को आते हुए देखा, तो वे भयभीत हो गए और मूसा पर अभियोग लगाया कि वह उन्हें जंगल में मारने के लिए लाया है। मूसा ने लोगों को आश्वस्त करने का प्रयास किया कि यहोवा उन्हें बचा लेगा (14:10-14)। फिर यहोवा ने मूसा को निर्देश दिए कि आगे क्या करना है, इस घोषणा के साथ कि उसकी "महिमा" होगी (14:15-18)।

जब कि "परमेश्वर का दूत" बादल का खम्भा बनकर मिस्रियों को रोके रहा (14:19, 20), मूसा ने अपना हाथ बढ़ाया। समुद्र दो भाग हो गया, और इस्राएली सूखी भूमि पर होकर पार हो गए (14:21, 22, 29)। जब फ़िरौन की सेना ने उनका पीछा करने का प्रयास किया, तो यहोवा ने इसे असंभव बना दिया (14:23-25)। मूसा के एक संकेत पर जल पीछा कर रहे रथों पर लौट आया, और सेना का नाश हो गया (14:26-28)।

जब इस्राएलियों ने देखा कि वे छुड़ा लिए गए हैं और उन्होंने मिस्रियों की मरी हुई देह देखीं, तो उन्होंने "यहोवा का भय माना" और "यहोवा पर और उसके दास मूसा पर भी विश्वास किया" (14:30, 31)।

फ़िरौन तथा उसकी सेना द्वारा पीछा (14:1-9)

[1]यहोवा ने मूसा से कहा, [2]"इस्राएलियों को आज्ञा दे, कि वे लौटकर मिगदोल और समुद्र के बीच पीहाहीरोत के सम्मुख, बालसपोन के सामने अपने डेरे खड़े करें,

उसी के सामने समुद्र के तट पर डेरे खड़े करें। 3तब फ़िरौन इस्राएलियों के विषय में सोचेगा, 'वे देश की उलझनों में फँसे हैं और जंगल में घिर गए हैं।' 4तब मैं फ़िरौन के मन को कठोर कर दूंगा, और वह उनका पीछा करेगा, तब फ़िरौन और उसकी सारी सेना के द्वारा मेरी महिमा होगी; और मिस्री जान लेंगे कि मैं यहोवा हूं।" और उन्होंने वैसा ही किया। 5जब मिस्र के राजा को यह समाचार मिला कि वे लोग भाग गए, तब फ़िरौन और उसके कर्मचारियों का मन उनके विरुद्ध पलट गया, और वे कहने लगे, "हम ने यह क्या किया, कि इस्राएलियों को अपनी सेवकाई से छुटकारा देकर जाने दिया?" 6तब उसने अपना रथ जुतवाया और अपनी सेना को संग लिया। 7उसने छ: सौ अच्छे से अच्छे रथ वरन मिस्र के सब रथ लिये और उन सभों पर सरदार बैठाए। 8और यहोवा ने मिस्र के राजा फ़िरौन के मन को कठोर कर दिया। सो उसने इस्राएलियों का पीछा किया; परन्तु इस्राएली तो बेखटके निकले चले जाते थे। 9पर फ़िरौन के सब घोड़ों, और रथों, और सवारों समेत मिस्री सेना उनका पीछा कर के उनके पास, जो पीहाहीरोत के पास, बालसपोन के सामने, समुद्र के तट पर डेरे डाले पड़े थे, जा पहुँची।

आयतें 1, 2. इससे पिछले अध्याय में, इस्राएलियों ने एताम में डेरा डाला हुआ था (13:20)। परमेश्वर ने उन्हें निर्देश दिए कि **वे लौटकर मिगदोल और समुद्र के बीच पीहाहीरोत के सम्मुख, बालसपोन के सामने अपने डेरे खड़े करें**, लाल समुद्र के तट पर। इन जगहों का स्थान अनिश्चित है। (में मानचित्र को देखें *अतिरिक्त अध्ययन: द रूट आफ दि एक्सोडस।*)

आयत 3. फ़िरौन को, जो मार्ग इस्राएली ले रहे थे, उसमें कोई समझदारी दिखाई नहीं दी होगी; उसे लगा होगा के लोग भटक गए हैं, **देश की उलझनों में फँसे हैं**। इसके लिए CEV कहती है, "राजा सोचेगा कि वे जंगल को पार करने से डरते हैं और देश से निकलने के किसी अन्य मार्ग की खोज में, इधर-उधर भटक रहे हैं।" यद्यपि यह रणनीति विचित्र लगती है, यह यहोवा के उद्देश्यों के अनुसार थी: यह उस जाल में चारा डालना था जिसमें फंसा कर उसने फ़िरौन की सेना को पकड़ना था जिससे कि इस्राएल स्वतंत्र हो सके और वह अपना पराक्रम दिखा सके।

आयत 4. स्वयं परमेश्वर ने अपने उद्देश्य स्पष्ट किए, यह कहकर कि उसका उद्देश्य **फ़िरौन के मन को कठोर** करना था। निर्गमन कभी-कभी कहता है कि फ़िरौन ने अपना मन कठोर किया; परन्तु विपत्तियों के वृतांत के अन्त की ओर, भाषा संकेत करती है कि परमेश्वर अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए फ़िरौन के मन को कठोर कर रहा था। जैसे उसने विपत्तियाँ भेजकर अपने लोगों को छुड़ाया था, उसने यह दिखा दिया कि वह ही सब के ऊपर परमेश्वर है। जब फ़िरौन इस्राएलियों के पीछे आता और पराजित होता, परमेश्वर की **महिमा** होती और **मिस्री** जान लेते कि **वह ही यहोवा** है।

आयत 5. यह जानकार कि इस्राएली मिस्र से चले गए हैं, **फ़िरौन और उसके कर्मचारियों** ने पूछा, **"हमने यह क्या किया?"** हो सकता है कि उसके परामर्शदाताओं ने समाचार दिया होगा कि इस्राएली देश से भागने का प्रयास कर

रहे हैं, जैसा कि उसे भय था, उपासना करने के लिए केवल जंगल में जाने भर के स्थान पर।[1] संभवतः, जैसा उसने पहले विपत्तियों के समय में किया था, फ़िरौन ने अपना मन **लोगों** को जाने देने के विरुद्ध पलट लिया। जो भी हो, मिस्रियों को बोध हुआ कि उन्होंने एक बहुमूल्य संपदा गँवा दी है; उनकी निर्माण योजनाओं में सेंत-मेत काम करने वाले इस्राएली मजदूर अब नहीं होंगे।

आयतें 6, 7. परिणामस्वरूप, फ़िरौन ने निर्णय लिया कि वह अपनी खोई हुई सम्पत्ति के पीछे जाएगा। उसने **अपने रथ** के साथ **छः सौ अच्छे से अच्छे रथ वरन मिस्र के सब रथ लिये**। उन सभी रथों **के ऊपर सरदार बैठाए**। पारिभाषिक शब्द "सरदार" (שָׁלִישׁ, *शलिश)* मूलतः रथों के सवारों में तीसरे व्यक्ति के लिए प्रयोग होता था; इन सवारों में एक सारथी, एक ढाल-धारक, और एक योद्धा होता था। लेख संकेत कर सकता है कि प्रत्येक रथ में तीन लोग थे। परन्तु बाद में यह शब्द उच्च पद के "सरदार" के लिए प्रयोग होने लगा, और अधिकांश अनुवाद इस शब्द को ऐसे ही प्रयोग करते हैं।[2] क्योंकि रथ उस समय उपलब्ध युद्ध के लिए सबसे घातक हथियार था (यह आज के टैंक के तुल्य था), वास्तव में फ़िरौन की सेना भयंकर थी।

आयत 8. यहाँ आकर परिस्थिति का सारांश प्रस्तुत किया गया है। न केवल फ़िरौन का "मन पलटा" था (14:5), परन्तु **यहोवा ने** उसके **मन को कठोर** भी कर दिया था। इसलिए फ़िरौन ने इस्राएलियों का **पीछा किया**, जब वे **बेखटके निकले चले जाते थे**। वाक्यांश בְּיָד רָמָה *(बेयद रामाह)*, जिसका अनुवाद "बेखटके" हुआ है, का शब्दार्थ है "निश्चिन्त तथा गर्व के साथ।" यह अभिव्यक्ति "इस्राएल के विश्वास का संकेत करती है, संभवतः उन्हें धमकाने वाले खतरे से अनजान होने के कारण।"[3]

आयत 9. आयत 7 से वृतांत पुनः आरंभ हो जाता है, यह जोड़ने के साथ कि **फ़िरौन** ने इस्राएलियों का पीछा किया अपनी **सेना और सवारों समेत**। यह पीछा करना सफल रहा; मिस्री सेना इस्राएलियों तक जा पहुँची जब वे लाल समुद्र के तट पर डेरे डाले हुए थे।

इस्राएली घबरा जाते हैं (14:10-14)

[10]जब फ़िरौन निकट आया, तब इस्राएलियों ने आंखें उठा कर क्या देखा, कि मिस्री हमारा पीछा किए चले आ रहे हैं; और इस्राएली अत्यन्त डर गए, और चिल्लाकर यहोवा की दोहाई दी। [11]और वे मूसा से कहने लगे, "क्या मिस्र में कब्रें न थीं जो तू हम को वहां से मरने के लिये जंगल में ले आया है? तू ने हम से यह क्या किया, कि हम को मिस्र से निकाल लाया? [12]क्या हम तुझ से मिस्र में यही बात न कहते रहे, कि हमें रहने दे कि हम मिस्रियों की सेवा करें? हमारे लिये जंगल में मरने की अपेक्षा मिस्रियों की सेवा करना अच्छा था।" [13]मूसा ने लोगों से कहा, "डरो मत, खड़े खड़े वह उद्धार का काम देखो, जो यहोवा आज तुम्हारे लिये करेगा; क्योंकि जिन मिस्रियों को तुम आज देखते हो, उन को फिर कभी न देखोगे। [14]यहोवा आप ही तुम्हारे लिये लड़ेगा, इसलिये तुम चुपचाप रहो।"

आयत 10. जब मिस्री निकट आए तो इस्राएली **अत्यंत डर गए**। जब राजा के पास इतनी बड़ी सेना थी तो फिर वे कैसे बच सकेंगे? लोगों की पहली प्रतिक्रिया थी कि वे सहायता के लिए **यहोवा की दोहाई दें**।

आयतें 11, 12. इस्राएलियों की दूसरी प्रतिक्रिया थी के वे मूसा से शिकायत करें (देखें 16:3; 17:3)। उन्होंने ताना मारते हुए पूछा कि क्यों **मूसा** उन्हें **मरने के लिए जंगल में** ले लाया। उन्होंने पूछा, "**क्या मिस्र में कब्रें न थीं जो तू हम को वहां से मरने के लिये जंगल में ले आया है ... ?"** प्रकट है कि मिस्र में बहुत कब्रें थीं। उनके प्रश्न की विडंबना का एक भाग यह है कि उस समय की किसी भी अन्य संस्कृति की अपेक्षा मिस्र ही मृत्यु, गाड़े जाने, और स्मारक कब्रों का प्रतीक था। लोग कह रहे थे, "यदि हमें मरना ही था, तो हम मिस्र में ही मर जाते।" साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि उन्होंने तो मूसा से उन्हें **रहने देने** के लिए कहा था जब वह उन्हें छुड़ाने के लिए **मिस्र** में पहली बार आया था। लोग युद्ध में मारे जाने की अपेक्षा सारी आयु दास बनकर सहते रहने के लिए तैयार थे।

इस्राएलियों ने क्यों उन चिन्हों के बारे में नहीं सोचा जिन्हें मूसा और हारून ने किया था। क्या वे इतनी शीघ्र उन दस विपत्तियों के बारे में भूल गए थे जो परमेश्वर ने मिस्रियों पर भेजीं थीं? क्या उन्हें इस बात का आभास नहीं था कि परमेश्वर ने फ़िरौन और उसके कर्मचारियों को इतना झुका दिया था कि उन्हें इस्राएल को जाने देने की अनुमति देनी पड़ी? वे उपहार कहाँ गए जिन्हें परमेश्वर ने मिस्रियों से अपने दासों को उनके जाने के समय दिलवाया था? यदि परमेश्वर के लोग उस सब के बारे में विचार करते जो परमेश्वर ने किया था, तो अवश्य ही वे वर्तमान स्थिति में भी उसके द्वारा उनकी रक्षा किए जाने के लिए भरोसा करते, जैसा कि वह पहले उनकी आवश्यकताएँ पूरी करता आया था। परन्तु उनका विश्वास अपर्याप्त निकला।

आयत 13. मूसा ने, इसकी तुलना में, विश्वास व्यक्त करने वाले शब्द बोले और ऐसे साहस के जो विश्वास करने से आता है। उसने उनके भय को शान्त किया इस बात की पुष्टि के द्वारा कि यहोवा उन्हें बचाएगा। अवश्य ही जब उसने कहा कि वे **यहोवा के उद्धार का काम** देखेंगे, वह उनके पाप से छुड़ाए जाने की बात नहीं कर रहा था। वरन, उसका अभिप्राय था मिस्र से उद्धार और जो दासत्व इस्राएल ने वहाँ अनुभव किया था उससे। इस्राएलियों को अब **मिस्रियों** से **डरने** की कोई आवश्यकता नहीं थी। वे अब के बाद **उनको फिर कभी नहीं देखेंगे**, जिसका अर्थ था, कि कम से कम अब मिस्री उन्हें दास बनाने में कभी सफल नहीं होंगे।

यह उद्धार यहोवा द्वारा संपन्न किया जाएगा। मूसा ने कहा कि लोगों का काम होगा कि वे **खड़े खड़े** देखें कि यहोवा क्या करने जा रहा है। खड़े खड़े के स्थान पर कुछ अनुवादों में "शान्त खड़े रहकर" (KJV; NKJV), और अन्यों में "दृढ़ खड़े रहकर" (NRSV; NIV) आया है।

आयत 14. जब परमेश्वर किसी के लिए लड़ता है, तो उस व्यक्ति को केवल **चुपचाप रहकर** - शान्त होकर बस देखना होता है उसे युद्ध जीतते हुए। **यहोवा आप ही तुम्हारे लिए लड़ेगा** इस खण्ड का मुख्य विचार है और पुराने नियम का

प्रमुख विषय।[4] यद्यपि इस्राएली "पाँति बंधे हुए" निकले थे (13:18), यहोवा ही वह "योद्धा" था जो उनके लिए लड़ा था (15:3)। अध्याय में, बाद में, जब मिस्रियों ने देखा कि वे पराजित हो गए हैं, उन्होंने पुकारा, "क्योंकि यहोवा उनकी [इस्राएल] ओर से मिस्रियों के विरुद्ध युद्ध कर रहा है" (14:25)। अपनी किसी उच्च कोटि की सेना, हथियार, या सैनिक क्षमता के कारण नहीं - परन्तु केवल इसलिए कि यहोवा उनकी ओर से लड़ा था - इस्राएली अपनी स्वतंत्रता जीतने पाए।

परमेश्वर के मूसा को निर्देश (14:15-20)

15तब यहोवा ने मूसा से कहा, "तू क्यों मेरी दोहाई दे रहा है? इस्राएलियों को आज्ञा दे कि यहां से कूच करें। 16और तू अपनी लाठी उठा कर अपना हाथ समुद्र के ऊपर बढ़ा, और वह दो भाग हो जाएगा; तब इस्राएली समुद्र के बीच हो कर स्थल ही स्थल पर चले जाएंगे। 17और सुन, मैं आप मिस्रियों के मन को कठोर करता हूं, और वे वहाँ भी उनका पीछा करेंगे। तब फ़िरौन और उसकी सारी सेना, और रथों, और सवारों के विनाश के द्वारा मेरी महिमा होगी। 18और जब फ़िरौन, और उसके रथों, और सवारों पर विजय द्वारा मेरी महिमा होगी, तब मिस्री जान लेंगे कि मैं यहोवा हूं।" 19तब परमेश्वर का दूत जो इस्राएली सेना के आगे आगे चला करता था जा कर उनके पीछे हो गया; और बादल का खम्भा उनके आगे से हटकर उनके पीछे जा ठहरा। 20इस प्रकार वह मिस्रियों की सेना और इस्राएलियों की सेना के बीच में आ गया; और बादल और अन्धकार तो था, तौभी रात को उन्हें प्रकाश मिलता रहा; और वे रात भर एक दूसरे के पास न आए।

आयत 15. इस आयत में, **यहोवा** प्रत्युत्तर दे रहा था **मूसा** की ऐसी विनती का जो दर्ज नहीं की गई है। मूसा द्वारा लोगों से कहे गए प्रोत्साहन के शब्दों के या तो पहले, अथवा बाद में, उसने परमेश्वर से बात की, प्रत्यक्षतः परमेश्वर से सहायता माँगने के लिए। परमेश्वर का आरंभिक प्रत्युत्तर था **"तू क्यों मेरी दोहाई दे रहा है?"** मानो कि वह कह रहा हो "क्या तुझे भरोसा नहीं है कि मैं तुम्हें छुड़ा लूँगा? तुम्हें दोहाई देने या शिकायत करने की आवश्यकता नहीं है।" फिर परमेश्वर ने एक अचम्भित कर देने वाली आज्ञा दी: **"यहां से कूच करें।"** इस्राएल तो "चट्टान और कठोर स्थान" - "पीछा कर रहे मिस्रियों और पार न हो सकने वाले समुद्र" के बीच में था।[5] उनके पीछे फ़िरौन की सेना थी, दोनों ओर जंगल था, और लाल समुद्र उनके सामने था। अब वे क्या कर सकते थे? परमेश्वर ने कहा "कूच करो।"

आयत 16. इसके बाद, परमेश्वर ने बताया कि लोग आगे कैसे बढ़ने पाएँगे। मूसा **अपनी लाठी उठा कर अपना हाथ समुद्र के ऊपर बढ़ाए**, और वह दो भाग हो जाएगा। और इस्राएली **स्थल ही स्थल** पर होकर चले जाएँगे।

आयतें 17, 18. परमेश्वर फिर से **मिस्रियों के मन को कठोर कर** देगा, और वे उनका पीछा करने का प्रयास करेंगे। जब उन्होंने ऐसा किया, तो उनमें होकर परमेश्वर की **महिमा** होगी। यह उस तथ्य के प्रति उल्लेख था कि परमेश्वर मिस्र की

सेना को समुद्र में नाश कर देगा। "मेरी महिमा होगी" כָּבֵד *(कबेद)* का अनुवाद है, जिसका अर्थ है "भारी, वज़नी, या आदरणीय होना।" इस शब्द का प्रयोग कभी-कभी धनवान और प्रभावी लोगों के संदर्भ में किया जाता है जो औरों से आदर और प्रशंसा के पात्र होते हैं। इसके अतिरिक्त, इस पारिभाषिक शब्द को बहुधा परमेश्वर को उसके योग्य आदर देने के लिए भी प्रयोग किया जाता है। इस लेख के लिए, NIV कहती है "मैं महिमा पाऊंगा" (देखें NRSV; NEB; NAB; NJB)। CEV कहती है, "मेरी महिमा होगी।" दोनों, इस्राएली और **मिस्री** यह **जान लेंगे** कि **यहोवा** ही परमेश्वर है।

आयत 19. समुद्र में मार्ग तैयार हो जाने के समय तक, इस्राएलियों की सुरक्षा के लिए, परमेश्वर ने मिस्रियों और इस्राएलियों के बीच एक अवरोध खड़ा कर दिया: **तब परमेश्वर का दूत जो इस्राएली सेना के आगे आगे चला करता था जा कर उनके पीछे हो गया।** लेख यह भी जोड़ता है कि बादल भी साथ ही, डेरे के सामने से पीछे की ओर खिसक गया।

दोनों, दूत और बादल परमेश्वर की उपस्थिति के प्रतीक थे। आग और बादल का **खम्भा** उनकी पूरी यात्रा भर इस्राएलियों के डेरों पर मंडराते रहे और उनकी अगुवाई करते रहे। इस प्रकार से यहोवा ने इस्राएलियों के सामने अपनी अविरल उपस्थिति का प्रत्यक्ष स्मारक उपलब्ध करवाया। जैसे कि इस परिच्छेद में "परमेश्वर का दूत," "बादल के खम्भे" के साथ संबद्ध है, वैसे ही 13:21, 22 में यहोवा बादल के खम्भे और आग के खम्भे के साथ संबद्ध है। किसी रीति से, "यहोवा," "परमेश्वर का दूत," और "खम्भा" सभी परमेश्वर को और इस्राएलियों के मध्य उसकी उपस्थिति को दिखाते हैं।

आयत 20. जो खम्भा दोनों छावनियों के बीच खड़ा था वह कुछ **प्रकाश** दे रहा था, परन्तु उसका प्राथमिक कार्य था मिस्रियों को रात भर परमेश्वर के लोगों से दूर रखना जब तक कि हवा के बहाव ने समुद्र में एक घाटी नहीं बना दी।

इस्राएलियों का छुड़ाया जाना (14:21-25)

[21]तब मूसा ने अपना हाथ समुद्र के ऊपर बढ़ाया; और यहोवा ने रात भर प्रचण्ड पुरवाई चलाई, और समुद्र को दो भाग कर के जल ऐसा हटा दिया, जिससे कि उसके बीच सूखी भूमि हो गई। [22]तब इस्राएली समुद्र के बीच स्थल ही स्थल पर हो कर चले, और जल उनकी दाहिनी और बाईं ओर दीवार का काम देता था। [23]तब मिस्री, अर्थात फ़िरौन के सब घोड़े, रथ, और सवार उनका पीछा किए हुए समुद्र के बीच में चले गए। [24]और रात के पिछले पहर में यहोवा ने बादल और आग के खम्भे में से मिस्रियों की सेना पर दृष्टि कर के उन्हें घबरा दिया। [25]और उसने उनके रथों के पहियों को निकाल डाला, जिससे उनका चलना कठिन हो गया; तब मिस्री आपस में कहने लगे, "आओ, हम इस्राएलियों के सामने से भागें; क्योंकि यहोवा उनकी ओर से मिस्रियों के विरुद्ध युद्ध कर रहा है।"

आयत 21. मूसा यहोवा के निर्देषों का पालन करता रहा। उसने **अपना हाथ बढ़ाया**, और परमेश्वर ने सारी रात **प्रचण्ड पुरवाई** चलाने के द्वारा **जल** को **दो भाग** कर दिया। यह कितनी नाटकीय घटना रही होगी! इसमें कोई संदेह नहीं होना चाहिए कि यह एक आश्चर्यकर्म था - परमेश्वर का एक चमत्कारिक कार्य जिसे किसी अन्य रीति से समझाया नहीं जा सकता है। परमेश्वर ने एक प्राकृतिक बल, "प्रचण्ड पुरवाई" को लेकर एक अलौकिक कार्य, एक आश्चर्यकर्म किया। उसने पुरवाई को, जो सारी रात और सारे दिन बहती रही थी, मिस्र के सारे देश पर टिड्डियों के छा जाने के लिए प्रयोग किया था (10:13, 14)। जिस "प्रचण्ड पुरवाई" ने लाल समुद्र को दो भाग कर दिया उसे काव्यात्मक रूप में "तेरे [परमेश्वर के] नथनों की साँस" (15:8) कहा गया है। जो हुआ था उसपर पुनः अवलोकन करते समय, पुराने नियम की वे पुस्तकें जो इस्राएल के **समुद्र** में से होकर छुड़ाए जाने को स्मरण करती हैं वे परमेश्वर द्वारा मिस्रियों को नाश करने की अपेक्षा उसके द्वारा जल को दो भाग करने पर अधिक केंद्रित होती हैं।[6]

आयत 22. जब **जल** दो भाग हो गया, तो इस्राएली **समुद्र के बीच स्थल ही स्थल** पर होकर चले। परमेश्वर के लोगों के दोनों ओर जो जल खड़ा था उसकी समानता **दीवार** से की गई है। क्योंकि हवा सारी रात बहती रही (14:21), इसलिए संभवतः, इस्राएलियों को समुद्र पार करने में इतनी देर लगी। लेख यह विशेष रूप से कहता है कि भोर होते होते समुद्र फिर ज्यों का त्यों हो गया (14:27)।

आयतें 23-25. मिस्रियों ने **रात के पिछले पहर में** इस्राएलियों का **समुद्र** में पीछा किया, लगभग प्रातः 2:00 और 6:00 के मध्य। प्रत्यक्षतः, **यहोवा** ने, जो फ़िरौन की सेना को इस्राएलियों के निकट जाने से बादल के द्वारा रोके हुए था, उन्हें आगे जाने दिया। हो सकता है कि फ़िरौन ने सोचा हो कि उसके युद्ध के रथ, उन धीमे चल रहे इस्राएलियों को उनके सारे सामान, परिवार, और पशुओं सहित, शीघ्र ही पकड़ लेंगे।

परन्तु जब वे अपने रथ समुद्र में ले गए, इस्राएलियों के मार्ग के पीछे-पीछे, तो मिस्रियों ने पाया कि जिन लोगों का वे पीछा कर रहे थे उनके समान सरलता से चल नहीं पा रहे थे। **बादल और आग के खम्भे** में अपनी उपस्थिति में से, यहोवा ने **मिस्रियों की सेना पर दृष्टि कर के उन्हें घबरा दिया**, और उसने **उनके रथों के पहियों को निकाल डाला, जिससे उनका चलना कठिन हो गया**। यहोवा ने किस प्रकार से मिस्रियों को घबरा दिया इसका तो पता नहीं है। कुछ व्याख्याकार अनुमान लगाते हैं कि मिस्रियों के युद्ध के भारी रथों से उस भूमि की सूखी सतह, जिस पर से इस्राएली होकर निकले थे, टूट गई, जिससे रथों के पहिए धीमे चलने लगे, फंसने लगे, या उतर भी गए। प्रासंगिक आयतों का विभिन्न प्रकार से अनुवाद किया जा सकता है :

> यहोवा ने ... मिस्री सेना में हड़बड़ी मचा दी। उसने उनके रथों के पहिए जाम कर दिए जिससे वे कठिनाई से घूमे (NRSV; देखें REB; NAB; NJB)।

... यहोवा ... ने उन्हें हड़बड़ा दिया। उनके रथों के पहिए फंस गए, और उनके लिए चलना कठिन हो गया (CEV)।

यहोवा ने ... [सेना को] घबरा दिया। उसने उनके रथों के पहियों को निकाल डाला जिससे उनका चलना कठिन हो गया (NIV; देखें NKJV)।

ऐसे में, फ़िरौन के सैनिकों को बोध हुआ कि वे इस्राएलियों को पकड़ नहीं पाएँगे। उनका निष्कर्ष था कि उनकी समस्याओं का आरंभ इब्रियों के परमेश्वर, **यहोवा** से था। हो सकता है कि अब उन्होंने वह सोचा हो जिसे वे पहले भूल गए थे: जो कुछ इस्राएलियों को बचा कर निकालने के लिए यहोवा ने मिस्र में किया था। उसे स्मरण करने से वे डर गए, और उनके विचार इस्राएलियों को पकड़ने के स्थान पर **इस्राएलियों के सामने से भागे**।

कल्पना कीजिए मिस्री सेना के क्रमों में आई उस गड़बड़ी का। सैनिक समुद्र में तो चले गए थे, परन्तु अब रथों को हिलाने में भी कठिनाई हो रही थी। अन्य, रथों के पहियों की क्षति के पश्चात, अपने घोड़ों को नियंत्रित करने का प्रयास कर रहे होंगे। कुछ तो निःसंदेह, आगे बढ़ने के प्रयास में होंगे, जबकि अन्य चिल्ला रहे होंगे, "पीछे मुड़ो!" और पश्चिमी तट पर पहुँचाने का प्रयास कर रहे होंगे। उनकी घबराहट की चरम सीमा के समय विनाश आ गया।

फ़िरौन की सेना डूब गई (14:26-31)

[26]फिर यहोवा ने मूसा से कहा, "अपना हाथ समुद्र के ऊपर बढ़ा, कि जल मिस्रियों, और उनके रथों, और सवारों पर फिर बहने लगे।" [27]तब मूसा ने अपना हाथ समुद्र के ऊपर बढ़ाया, और भोर होते होते क्या हुआ, कि समुद्र फिर ज्यों का त्यों हो गया; और मिस्री उलटे भागने लगे, परन्तु यहोवा ने उन को समुद्र के बीच ही में झटक दिया। [28]और जल के पलटने से, जितने रथ और सवार इस्राएलियों के पीछे समुद्र में आए थे, वे सब वरन फ़िरौन की सारी सेना उस में डूब गई, और उस में से एक भी न बचा। [29]परन्तु इस्राएली समुद्र के बीच स्थल ही स्थल पर हो कर चले गए, और जल उनकी दाहिनी और बाईं दोनों ओर दीवार का काम देता था। [30]इस प्रकार यहोवा ने उस दिन इस्राएलियों को मिस्रियों के वश से इस प्रकार छुड़ाया; और इस्राएलियों ने मिस्रियों को समुद्र के तट पर मरे पड़े हुए देखा। [31]और यहोवा ने मिस्रियों पर जो अपना पराक्रम दिखलाया था, उसको देखकर इस्राएलियों ने यहोवा का भय माना और यहोवा और उसके दास मूसा पर भी विश्वास किया।

आयतें 26, 27. फिर से **यहोवा** ने **मूसा से** बात की, उससे कहा कि **अपना हाथ समुद्र के ऊपर बढ़ा** जिससे कि **जल** ज्यों का त्यों हो जाए और **मिस्रियों** को डुबो दे। मूसा ने वैसा ही किया जैसा परमेश्वर ने कहा, और समुद्र **ज्यों का त्यों** हो गया। हड़बड़ाए और घबराए हुई रथवाहकों ने उनपर आकर गिरते हुए समुद्र में

रथ चलाना जारी रखा। क्रिया נָעַר *(नार)* जिसका 27 आयत में अनुवाद **झटक दिया** किया गया है, उसका "बहा दिया" (NIV) और "उछाल दिया" (NRSV) भी किया गया है।[7] एक व्याख्याकार ने समझाया,

> क्रिया "उछालना" ... का अर्थ "झटक के अपने आप को मुक्त करना, झटक देना" भी हो सकता है। इसलिए हम इस कथन को शब्दार्थ विवरण देने वाला नहीं, परन्तु बात को बल के साथ स्थापित करने वाली आलंकारिक अभिव्यक्ति सोच सकते हैं: "यहोवा ने मिस्रियों को समुद्र में झटक दिया।" समुद्र के इस आश्चर्यकर्म के साथ, मानो यहोवा मिस्रियों से कह रहा था, "तुम्हारे साथ बहुत हो गया! अब चले जाओ!" और उनकी चिपके रहने वाली उपस्थिति से झटक के अपने आप को सदा के लिए मुक्त कर लिया।[8]

आयतें 28, 29. परमेश्वर द्वारा उन्हें "झटक दिए जाने" के परिणामस्वरूप, वे सारे मिस्री जो **समुद्र में आए थे**, समुद्र ही में मर गए। टिड्डियों की सेना और **फ़िरौन** की **सेना** में समानान्तर खींचा जा सकता है क्योंकि दोनों ही समूह लाल समुद्र में नाश हुए (10:19)। मिस्री सेना के नाश के बाद, इस्राएल पर से मिस्र का भय और धमकी अंततः पूर्णतः समाप्त हो गया।[9]

आयतें 28 और 29 इस्राएल के अनुभव की मिस्रियों के परिणाम से तुलना करती हैं। मिस्री जल के मध्य में मर गए; परन्तु परमेश्वर ने **इस्राएलियों** को बचा लिया, उन्हें लाल समुद्र में **स्थल ही स्थल पर** होकर चलने के लिए सक्षम किया, और **जल को** उनके दोनों ओर **दीवार** के समान बना दिया (देखें 14:22)। जैसे कि पहिलौठों की मृत्यु का अर्थ था मिस्र के लिए मृत्यु जबकि फसह के पर्व ने इस्राएलियों को सुरक्षित रखा था, वैसे ही लाल समुद्र मिस्रियों के लिए मृत्यु लाया परन्तु इस्राएलियों को नया जीवन दिया।

आयत 30. अध्याय का अन्त समुद्र में से इस्राएल के निकल जाने का सारांश बताने वाले कथन से होता है। विभाजित जल के मध्य में से अपने लोगों को सुरक्षित निकालकर परमेश्वर ने उन्हें बचाया। इस्राएली अपने उद्धार और मिस्रियों की पराजय के प्रति सुनिश्चित हो सके, क्योंकि उन्होंने अपनी आँखों से **मिस्रियों को समुद्र तट पर मरे पड़े हुए देखा**। यह प्रत्यक्षदर्शी गवाह का उत्तम उदाहरण है। कभी भी लोग इस बात पर संदेह नहीं कर सकते थे कि परमेश्वर ने उन्हें लाल समुद्र में से मिस्रियों से बचाया था, क्योंकि उन्होंने प्रमाण अपनी आँखों से देखा था।

आयत 31. परमेश्वर के बलवान **पराक्रम** से छुड़ाए जाने से भय और विश्वास दोनों उत्पन्न हुए होंगे। लोगों ने **यहोवा का भय** माना! एक ऐसे परमेश्वर के सम्मुख, जो ऐसे आश्चर्यकर्म कर सकता है और अपने विरोधियों को इतनी सम्पूर्णता से नाश कर सकता है, व्यक्ति को श्रद्धा, आदर, और आज्ञाकारिता के साथ रहना चाहिए। इस्राएलियों का परमेश्वर में, और उसके प्रतिनिधि और प्रवक्ता के रूप में मूसा में विश्वास बना: उन्होंने **यहोवा पर और उसके दास मूसा पर भी विश्वास किया**।[10] लोगों का मूसा में विश्वास, इस समय से पूर्व और पश्चात, परमेश्वर में उनके विश्वास के साथ निकटता से जुड़ा हुआ था। मूसा के शब्दों पर विश्वास करना परमेश्वर के

शब्दों पर विश्वास करना था; परमेश्वर में विश्वास करना मूसा में विश्वास करना - उसमें भरोसा और आस्था रखना था - जिसे परमेश्वर ने अपने लोगों की अगुवाई करने के लिए नियुक्त किया था।

अनुप्रयोग

जब हमारा विश्वास परखा जाए (अध्याय 14)

याकूब 1:3 कहता है, "तुम्हारे विश्वास के परखे जाने से धीरज उत्पन्न होता है।" संभवतः जिस परखे जाने की बात याकूब कर रहा था वह सताव था। विचार यह है कि जब किसी मसीही का विश्वास परखा जाता है और वह फिर भी विश्वासयोग्य बना रहता है, वह आत्मिक जीवन में बढ़ता है। दुर्भाग्य से, हर कोई परीक्षा में उत्तीर्ण नहीं होता है।

क्या कभी हमारे विश्वास की परख हुई है? क्या हमें कभी परमेश्वर पर भरोसा छोड़ देने का प्रलोभन आया है? जब हमारे लिए जीवन कठिन हो - किसी व्यक्तिगत बीमारी, शोक, आर्थिक कठिनाइयों, पारिवारिक कलह, या व्यक्तिगत समस्याओं से - तब हमारा विश्वास परखा जाता है। कभी-कभी यह तब भी सत्य होता है जब हमारे जीवन सही चल रहे होते हैं। उदाहरण के लिए, संपन्नता हमें भौतिकवादी होने का प्रलोभन दे सकती है। लाल समुद्र के तट पर खड़े इस्राएलियों के अनुभव हमें कुछ दिशा निर्देश प्रदान करते हैं।

जब हमारा विश्वास परखा जाए, तो हम स्मरण रखें कि हालात उतने बुरे नहीं हैं जितने प्रतीत होते हैं। यह इस्राएलियों के लिए सत्य था। उन्हें लगा कि वे बच निकले हैं। उनके आनन्द और उल्लास की कल्पना कीजिए! फिर वे समुद्र के किनारे पर पहुँचे, और उनका आनन्द शोक में परिवर्तित हो गया। उनके सामने समुद्र था, दोनों ओर जंगल था, और उनके पीछे फ़िरौन की सेना थी (14:9)। उनके विरोधी बल, अभिभूत कर देने वाले थे। उन्हें बचने का कोई मार्ग नहीं सूझ पड़ रहा था। लेकिन क्योंकि हम शेष कहानी को जानते हैं, इसलिए हम यह भी जानते हैं कि बचने का एक मार्ग था। अंततः, परमेश्वर ने उन्हें छुड़ा लिया।

इस्राएलियों के समान, हम भी नकारात्मक की ओर देखने की प्रवृत्ति रखते हैं, सबसे बुरे की कल्पना करते हैं, और जब हम समस्याओं में न भी हों, सकारात्मक संभावनाओं को देखने में असफल रहते हैं। हमें विश्वास रखना चाहिए कि परिस्थिति उतनी अंधकारपूर्ण नहीं है जितनी प्रतीत होती है।

जब हमारा विश्वास परखा जाए, तो हमें परमेश्वर की ओर देखना चाहिए। इस्राएलियों ने "परमेश्वर की दोहाई दी" (14:10)। इतना तो उन्होंने ठीक किया - परन्तु फिर वे कुड़कुड़ाने लगे। ऐसा करके उन्होंने दो नकारात्मक प्रवृत्तियाँ दिखाईं जो बाद में भी उनका गुण बनी रहीं: स्मरण न रखना और कृतघ्नता। वे भूल गए कि परमेश्वर ने उनके लिए क्या-क्या किया था, और वे उसकी आशीषों के प्रति कृतघ्न रहे। लेकिन फिर भी, परमेश्वर ने उनकी दोहाई के प्रत्युत्तर में उन्हें प्रतिज्ञा दी कि उन्हें छुड़ाएगा। मूसा ने उन्हें आश्वस्त किया कि परमेश्वर उन्हें छुड़ाएगा:

“डरो मत, खड़े खड़े वह उद्धार का काम देखो, जो यहोवा आज तुम्हारे लिये करेगा” (14:13, 14)।

जब भी हमारा विश्वास परखा जाए तब परमेश्वर की ओर मुड़ना हमारे लिए स्वाभाविक होना चाहिए। परमेश्वर में - प्रार्थना के द्वारा, पवित्र-शास्त्र के द्वारा, और हमारे साथी मसीहियों के द्वारा - हम परीक्षा के समय के लिए उपयुक्त सहायता और सांत्वना पा सकते हैं। कभी-कभी लोग, उसके निकट आने के स्थान पर, परमेश्वर से और दूर चले जाते हैं यहाँ तक कि कलीसिया से भी मुँह मोड़ लेते हैं। ऐसा हमारे लिए कभी न कहा जाए!

जब हमारा विश्वास परखा जाए, हमें आगे बढ़ना है। हमें आगे बढ़ते जाना है स्वर्गीय मार्ग में, प्रतिज्ञा किए हुए देश की ओर। निर्गमन 14 की कहानी की सबसे उल्लेखनीय बात परमेश्वर के निर्देशों में पाई जाती है। मूसा के “खड़े खड़े देखो” (14:13) कहने के पश्चात, परमेश्वर ने कहा, “यहाँ से कूच करो” (14:15)। उनका विश्वास परखा गया! यह उनके पक्ष में है कि, अपनी शंकाओं के होते हुए भी, वे वास्तव में “कूच करके” समुद्र में चल दिए। जैसे-जैसे समुद्र खुलता चला गया, वे सूखी भूमि पर चलते चले गए। ऐसा करने से वे बच गए, अपने संकट से छुड़ा लिए गए।

हमारे लिए कैसा है? जब हमारा विश्वास परखा जाए, सामान्यतः हम जानते हैं कि हमें क्या करना है। प्रश्न यह है कि हम उसे करेंगे या नहीं - हमारी शंकाओं, भय, और समस्याओं के होते हुए भी।

बहुधा जब हमारा विश्वास विकट परिस्थितियों या कठिन हालात द्वारा परखा जाए, तो हमें वह करना चाहिए जो इस्राएलियों को करने के लिए कहा गया था: (1) परमेश्वर पर निर्भर हों: “खड़े खड़े यहोवा का उद्धार देखो” (14:13)। (2) फिर “कूच करो” (14:15)। पौलुस ने कहा, “जो बातें पीछे रह गई हैं उन को भूल कर, आगे की बातों की ओर बढ़ता हुआ निशाने की ओर दौड़ा चला जाता हूं, ताकि वह इनाम पाऊं, जिस के लिये परमेश्वर ने मुझे मसीह यीशु में ऊपर बुलाया है।” (फिलि. 3:13, 14)। क्या हमारे सामने कोई समुद्र है? परमेश्वर उसे विभाजित कर सकता है। क्या हमारे सामने कोई दीवार है? उसे गिरा देने में परमेश्वर हमारी सहायता कर सकता है। क्या हमारा सामना किसी बन्द द्वार से हो रहा है? परमेश्वर उस द्वार को खोल सकता है। हमें समुद्र में से होकर चल देना चाहिए, दीवार को गिरा देना चाहिए, या द्वार में से प्रवेश कर लेना चाहिए। हमारे विश्वास के परखे जाने का सीधा सा समाधान है, “विश्वास में बने रहो,” वह करते रहो जो प्रभु चाहता है कि हम करते रहें।

उपसंहार। परमेश्वर के पास हमारे व्यक्तिगत जीवनों के लिए और कलीसिया के सामूहिक जीवन के लिए समाधान है। हमें उसके निर्देशों को सुनकर आगे बढ़ते जाना है, चाहे आगे का मार्ग असंभव ही क्यों न लगे। जो परमेश्वर लाल समुद्र को खोल सकता है वह हमारे लिए भी द्वार खोल सकता है जिससे हमारे लिए भी आशीष हो और हमारी आशीष में औरों के लिए भी आशीष हो।

अंततः छुटकारा! (अध्याय 14)

"स्वतंत्रता" ऐसा शब्द है जो लोगों को बहुत प्रिय है। अनेकों देशों ने स्वतंत्र होने के लिए, या बने रहने के लिए युद्ध लड़े हैं। इसीलिए हमें मिस्री दासत्व से इस्राएलियों के छुड़ाए जाने की कहानी सुनने में मज़ा आता है। परमेश्वर ने दासत्व में पड़े लोगों की दोहाई को सुना और उन्हें वास्तव में छुड़ा लिया! वह हमारे जीवनों में भी यही कर सकता है (यूहन्ना 8:32, 36)।

वे दास बनाए गए थे। परमेश्वर ने उनकी चिल्लाहट को उनके दुःख और पीड़ा के कारण सुना (निर्गमन 3:7)। अपने प्रवक्ता के द्वार उसने मिस्र के राजा को आज्ञा दी, "मेरी प्रजा को जाने दो!" फिर, अपने सामर्थी हाथ से, उसने उन्हें दासत्व से छुड़ाया। हम भी हैं - या थे - पाप के दासत्व में (रोमियों 6:19-23)। यह दासत्व भी पीड़ादायक है, और उसकी मजदूरी केवल मृत्यु है। जब तक हम पाप के दासत्व में हैं, हम परमेश्वर रहित हैं, मसीह से अलग किए हुए हैं, और बिना किसी आशा के हैं (इफि. 2:12)।

वे परमेश्वर के पराक्रम से छुड़ाए गए। इस्राएल के लिए अच्छा समाचार था कि उन्हें छुड़ाने के लिए परमेश्वर ने मानव इतिहास में हस्तक्षेप किया (3:8)। यद्यपि भाषा अनुकूलित करने वाली है, वह विशेष रूप से अर्थपूर्ण भी है: परमेश्वर ने कहा, "मैं उन्हें छुड़ाने के लिए उतर आया हूँ।" क्या यह विलक्षण नहीं है कि उनके उद्धार के लिए परमेश्वर ने व्यक्तिगत रीति से मानवीय प्रसंगों में हस्तक्षेप किया? परमेश्वर ने उन्हें विपत्तियों के द्वारा छुड़ाया। कुछ बार फ़िरौन इस्राएलियों को जाने देने की अनुमति देने के लिए द्रवित हुआ। हर बार जब विपत्ति को हटा दिया गया, तो उसने अपना मन कठोर किया और उन्हें स्वतंत्र करने से इनकार कर दिया। अंततः परमेश्वर ने मिस्र के पहलौठे तो मार डाले (11:4, 5; 12:29), परन्तु आज्ञाकारी इस्राएलियों के ऊपर से, जिन्होंने अपने द्वारों के चौखटों पर लहू लगाया था, निकल गया (देखें 12:7, 13)। फ़िरौन ने दासों को छोड़ तो दिया, परन्तु बाद में अपना मन बदला और उनका पीछा किया (14:5-9)। फिर परमेश्वर ने इस्राएलियों को लाल समुद्र में होकर छुड़ाया। जब फ़िरौन के सैनिकों ने पीछा करना चाहा, वे नाश हो गए (14:24-28)। अंततः इस्राएल मिस्र के दासत्व से मुक्त हो गया। इस्राएली अपने भलाई या सामर्थ्य से नहीं छुड़ाए गए, परन्तु परमेश्वर के पराक्रम और दया और अनुग्रह के द्वारा। वे लहू के द्वारा छुड़ाए गए - क्योंकि उन्होंने लहू को द्वारों के चौखटों पर और अलंगों पर लगाया था।

आज लोगों के लिए भला समाचार यह है कि मानवजाति को छुड़ाने के लिए परमेश्वर ने फिर से एक बार मानव इतिहास में हस्तक्षेप किया है। इस बार वह यीशु मसीह बनकर आया, जिसने जन्म लिया, जीवन बिताया, मारा गया, और उसका पुनरुत्थान हुआ, और वह स्वर्ग को चढ़ गया जिससे हम आत्मिक दासत्व से छुड़ाए जाएँ! उसने यह संभव किया है कि हम उसके लहू को अपने जीवनों पर लगाएँ, बपतिस्मा लेने के द्वारा (रोमियों 6:3, 4)। पौलुस ने इस्राएल के बादल और समुद्र में से होकर निकलने को बपतिस्मा के समान समझा (1 कुरि. 10:1, 2)। इसलिए हम अपने बपतिस्मा की, उनके अनुभव से तुलना कर सकते हैं। जैसे

वे समुद्र के पूर्वी तट पर खड़े होकर आनंदित हुए, वैसे ही हम भी जब बपतिस्मा के जल में से होकर निकलते हैं, आनंदित हो सकते हैं।

उपसंहार। कोई इससे इनकार नहीं कर सकता है कि हमें छुड़ाए जाने के लिए कुछ करना है। हमें बपतिस्मा लेने के लिए सहमत होना है, जैसे कि इस्राएली अपने द्वारों पर लहू लगाने के लिए सहमत हुए थे। हमें यीशु में विश्वास करना है, उसमें अपने विश्वास का अंगीकार करने को सहमत होना है, अपने पापों से पश्चाताप करना है, और बपतिस्मा में उसके साथ दफनाया जाना है। जब हम सुसमाचार का पालन करते हैं, हम पाप के दोष, दासत्व, और दण्ड से छुड़ाए जाते हैं (प्रेरितों 2:38; रोमियों 6:22; 8:1)। हमारे छुटकारे का कारण हमारा आज्ञापालन नहीं है, परन्तु मसीह का लहू और परमेश्वर का अनुग्रह।

"खड़े खड़े ... कूच करो" (14:13, 15)

जब इस्राएलियों के सामने एक असंभव परिस्थिति थी, यहोवा का पहला निर्देश था "खड़े खड़े" और फिर "कूच करो।" कभी-कभी हमें खड़े रहने की आवश्यकता भी होती है, मार्गदर्शन के लिए प्रभु के प्रावधानों की प्रतीक्षा करते हुए, जब हम प्रार्थना, अध्ययन, मनन, और उसकी इच्छा को खोजते हैं। अन्य परिस्थितियों में, हमें विश्वास में आगे बढ़ने के लिए "कूच करना" होता है, प्रभु की इच्छा को पूरा करने के कार्य करने के लिए। हमें दोनों ही को करने के लिए तैयार रहना चाहिए।

"मूसा में बपतिस्मा" (14:21, 22; 1 कुरि. 10:1, 2)

हम लाल समुद्र में होकर इस्राएलियों के छुड़ाए जाने की कहानी को बपतिस्मा के प्रतिरूप में लेने के लिए न्यायसंगत हैं क्योंकि पौलुस ने 1 कुरिन्थियों 10:1, 2 में दोनों की तुलना की। लाल समुद्र में से होकर निकलना हमारे मसीही होने के समान कैसे हुआ? (1) दोनों बपतिस्माओं में डुबोया जाना सम्मिलित है: इस्राएली बादल और समुद्र में डुबोए गए; हम जल में डुबोए गए। (2) दोनों ही से उद्धार आया: इस्राएलियों को दासत्व से छुटकारा मिला, और हमने नए जन्म का अनुभव लिया। (3) दोनों से बाद में हर्ष करने का कारण मिला। (4) दोनों से परमेश्वर द्वारा छुटकारा संभव हुआ। (5) दोनों में विश्वास की आवश्यकता थी। इस्राएलियों को परमेश्वर पर विश्वास कर के जल में से होकर जाना था; उद्धार के लिए अपने विश्वास के कारण हमने परमेश्वर की आज्ञा का पालन किया। (6) दोनों के द्वारा एक बात से दूसरी में छुटकारा मिला। इस्राएल परमेश्वर की प्रजा हो गए, परमेश्वर की इच्छा और कार्य करने के लिए उत्तरदायी; यही हमारे लिए भी हुआ।

समाप्ति नोट्स

[1]इस संभावना का सुझाव उम्बर्टो कस्सुतो ने दिया, *ए कॉमेन्ट्री ऑन द बुक ऑफ एक्सोडस,* ट्रांस. इसराइल अब्राहम्स (जेरुसलेम: मग्नेस प्रैस, 1997), 161, एण्ड पीटर एन्स, *एक्सोडस,* द NIV

एप्लिकेशन कॉमेन्ट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जोंडरवैन, 2000), 271. [2]जे. फिलिप हयैट, *एक्सोडस*, द न्यू सेंच्युरी बाइबल कॉमेन्ट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: वम. बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग को., 1971), 152. [3]वोल्डेमॉर जैन्ज़ेन, *एक्सोडस*, बिलीवर्स चर्च बाइबल कॉमेन्ट्री (स्कॉटडेल, पेंसिल्वेनिया: हेरल्ड प्रैस, 2000), 176. [4]देखें व्यव. 1:30; 3:22; 20:4; यहोशू 10:14; 10:42; 2 इतिहास 20:29. यहोवा के लोगों का उसपर उनके लिए लड़ने के लिए या विजय दिलवाने के लिए निर्भर होने के उदाहरणों के लिए, देखें यहोशू 6:1-21; न्यायियों 6:13-16; 1 शमूएल 17:45-47; 2 राजा 6:16, 17; 19:32-37. [5]जौन आई. डरहम, *एक्सोडस*, वर्ड बिबलिकल कॉमेन्ट्री, वोल. 3 (वैको, टेक्सस: वर्ड बुक्स, 1987), 198. [6]नहूम एम. सरना, *एक्सप्लोरिंग एक्सोडस: द ओरिजिंस ऑफ बिबलिकल इस्राएल* (न्यू यॉर्क: स्कोकेन बुक्स, 1996), 114-16. सरना ने यहोशू 4:22-28; भजन 66:5, 6; 77:15-21; 78:13, 53; 106:9-11, 22; 114:3, 5; 136:13-15; यशायाह 51:9, 10; 63:11-13 के हवाले दिए। [7]NIV कहती है कि "समुद्र अपने स्थान पर वापस चला गया। मिस्री उसकी ओर भाग रहे थे, और यहोवा ने उन्हें समुद्र में बहा दिया।" NRSV अनुवाद करती है, "... भोर को समुद्र अपनी सामान्य गहराई को लौट आया। जब मिस्री उसके सामं से भाग रहे थे, यहोवा ने मिस्रियों को समुद्र में उछाल दिया।" [8]जैन्ज़ेन, 180. [9]सारना, 113. [10]मूसा को अन्य परिच्छेदों में भी दास कहा गया है (गिनती 12:7, 8; व्यव. 34:5; यहोशू 1:2, 7; मलाकी 4:4)। यह सादर ओहदा सामान्यतः उन्हें दिया जाता था जो परमेश्वर के द्वारा किसी विशेष कार्य के लिए चुने जाते थे और वे उसके आज्ञाकारी रहते थे, जैसे कि: अब्राहम, अय्यूब, कालेब, यहोशू, दाऊद, एलिय्याह, यशायाह, और मसीह। कभी-कभी यह तब भी सत्य होता है जब हमारे जीवन सही चल रहे होते हैं। उदाहरण के लिए, संपन्नता हमें भौतिकवादी होने का प्रलोभन दे सकती है। लाल समुद्र के तट पर खड़े इस्राएलियों के अनुभव हमें कुछ दिशानिर्देश प्रदान करते हैं।